Please Visit TBRC.org to download the scan of the whole volume

Surrogate LC Cataloging Record

Rgya chen bka' mdzod: the expanded edition of the writings of 'jam mgon ...

LC Control Number: None

Type of Material: Book (Print, Microform, Electronic, etc.)
Personal Name: Kon-sprul Blo-gros-mtha'-yas, 1813-1899.

Main Title: Rgya chen bka' mdzod: the expanded edition of the writings of

'jam mgon kon sprul blo gros mtha' yas

Uniform Title: [Works]

Published/Created: New Delhi: Shechen, 2002.

Description: 13 v.

Notes: Text in Tibetan

Subjects: Buddhism--China--Tibet.

LC Classification: BQ7564 +

Dewey Class No.:

Geog. Area Code: a-cc-ti

CALL NUMBER: BQ7564+

TBRC Scanning Information

Scanned by M/s Satluj Siti Enterprises, 63-F Sujan Singh Park, New Delhi, India, for the Tibetan Buddhist Resource Center, 115 5th Ave. 7th Floor, New York, NY 10003 USA 2003

ORIGINALLY PRINTED BY SHECHEN MONASTERY WITH THE SUPPORT OF TSADRA FOUNDATION



2002



THE EXPANDED EDITION OF THE WRITINGS OF 'JAM MGON KONG SPRUL

BLO GROS MTHA' YAS VOLUME 4

Shechen Publications



RGYA CHEN BKA' MDZOD

The expanded edition of the writings of 'jam mgon kong sprul blo gros mtha' yas (1813-1899).

New Delhi

2002

Reproduced from a set of prints the dpal spungs xylographs from eastern Tibet

VOLUME 4

Shechen Publications

Founded by H.H. Dilgo Khyentse Rinpoche

(Under: SRPC Trust, Bodhgaya, Bihar, India)

EA-12, iind Floor, Inder Puri, New Delhi-110 012 (India) Tel.: 583 4230 Fax.: (+91 11) 583 4238 E-mail.: shechen@del3.vsnl.net.in

Shechen Maha Buddha Vihara, P.O. Box 136 Kathmandu, Nepal. Tel/Fax (977 1) 470 215

ISBN 81-7472-077-4 (Vol.4) ISBN 81-7472-073-1 (Set.) Printed at Jayeed Press, Ballimaran, Delhi.

Copyright year 2002, Shechen Publications

This publication has been supported by a grant from the Tsadra Foundation

PREFACE

Jamgön Kongtrul Lodrö Thaye ('jam mgon kong sprul blo gros mtha' yas, 1813-1899) along with Jamyang Khyentse Wangpo, Patrul Rinpoche, Lama Mipham, and other 19th century luminaries have eloquently shown how the various teachings of the nine vehicles of Tibetan Buddhism form one coherent, non-contradictory whole. These great masters inspired the nonsectarian movement that flourished in the nineteenth century. Gathering teachings from all areas of Tibet and from all spiritual traditions, these teachers — themselves authentic spiritual masters, scholars, poets, commentators, and accomplished yogins — saved the heritage of Tibetan Buddhism from decline and restored its vitality, a heritage that is still benefiting us today. So that they could be practiced and transmitted to future generations, the essential teachings were compiled into major collections, such as The Five Great Treasuries (mdzod chen po lnga) which were collected and edited by Jamgön Kongtrul Lodrö Thaye.

Out of the five treasuries, the rgya chen bka' mdzod comprises the writings of Jamgön Kongtrul that are not included in the other four. It contains devotional praises and prayers (bstod tshogs gsol 'debs), guru yogas, sadhanas (sgrub thabs), rituals (cho ga), manuals for bestowing empowerments (dbang khrigs), pieces of spiritual

advice (zhal gdams), songs of realization (gsung mgur), inventories and list of topics (dkar chag), explanations of meditation practices (khrid yig), and biographics

(rnam thar). An earlier edition of this collection was published under the inspiration of Dilgo Khyentse Rinpoche (dil mgo mkhyen brtse rin po che, 1910-1991) by Lama Ngodrup

in 1975-6, when no complete set of these volumes was available outside Tibet. Following the reprint of the 4 volumes of shes by a kun khyab mdzod and of the 18 volumes of the gdams ngag mdod, we are now pleased to present an expanded edition of the rgya chen bka' mdzod reproduced from prints of the xylographs kept at dpal spungs monastery in eastern Tibet. The present edition includes not only the main collection of Jamgön Kongtrul's writings but additional liturgical collections (such as those pertaining to the bla ma dgongs 'dus, rat gling phur pa and thugs rje gsang 'dus) arranged by Jamgön Kongtrul, for which separate sets of wooden blocks existed at dpal spungs, as well as a few miscellaneous writings that were not part of the other treasuries. - Matthieu Ricard, Shechen Monastery, May 2002.

श्वार	७०। प्रहस्रसर्वेदर्गेट्सुयर्त्तेर्चेशस्रवरःप्यस्यीयस्ट्रियस्तुस्त्युस्त्यस्थः दो स्यदेश्वासःस्वयःस्वरं स्यायास्त्रविद्याः १४ १-५६ ह्रेट्रस्यस्य	१.सूज्य च्य
4	खेता १ 57-60 वर्षाराञ्चन हो नमेराराञ्चन वर्षायेन। ८ 61-68 गहिर गार्थर हें याराराञ्चन होना होता १ 69-70 दरायर वर्ष राज्येन। ८८ 71-166	मुजिया
4.	विश्व	र खेया
थ्य अ	351-362 तहेगर्थं प्रमुन् क्रेंग् क्रेंग मूर्ज केंग ५ 363-372 देन बेर स्वेंग प्रमुग १ 373-374 तहरा न्या केंग निर्माण केंग न	্ট্র্র্ম স
	থ্রিব। ২ 379-386 শ্লুমেন্স্রেমান্স্রমাথ্রবা ৭ 387-390 র্নিন্টেবাথ্রবা ৭ 391-444 भे শুমানস্ত্রন্ত্রবাথ্রবা ২৫ 445-534 মর্চ্চর্ন্তবা ২৫ 535-612 বার্মান্স্	,दर्के ग्र
	क्र 613-656 सदस्र क्रुस रवस वर्त्त सके दिन के वित्त निर्देश स्वाप के वित्त स्वाप स्व	15 येर

789-792 ५८% ठेंग हें हेते क्रेंग नज्ञरायेग क्रें न्यग्रोन् अर्द्धव्यक्तिया बुन्य सेन्यन्त्र व्यवस्थित 793-794 837-838 द्रमञ्जायतः द्वेस्यसेन्यः प्रह्मेद्रस्यते के वास्त्रेया 839-854 ঘ্রমান্ট্রবা 799-836 *ያ*ጓ 855-880 देति हेरा पादर दर पार्श ह्यें र स्था सुर स्था १०० 881-904 नसूर केंग्रा थेना 905-952 953-980 ર્≃ 23 ्राप्त्राप्त्रा १ 981-982 नह्यूरायास्थायाः येता विकास ই্ক্রিনেম'শূন। १ 1031-1032 ইনির্বাশ দেই ইন্বাই শুর্ ঘনশ গ্রেছ্র ব্লী দেই ক্র্রনেপ্র শুন্ , ८० १०३३-१११४ श्रेप्त्राराध्य स्थित्र स्थित्र स्थित्र १३ १११५-११४० गर्गमारक्वराद्वेराष्ट्रेय। 🗢 1217-1224 तहस्र द्वारम्बरमात्रास्तरी इत्यातर्द्वेराष्ट्रेय। ३ 1225-1230 हे विति त्युगमास्य त्युगमास्य द्वारायस्य स्थ्रीत स्थ्रीय **36** 1141-1216

1231-1250 सुरार्धिनार्श्वेनार्श्वेदानुद्धियात्वेन। ५ 1251-1260

व्ययः यह्रवः गुर्वेत्यः यहेयसः श्रेय। १ 1261-1262 यहस्र॥

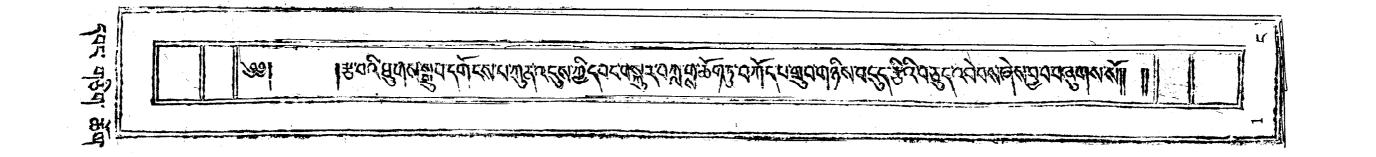


Image As Per Original Document

१९९०। विस्त्रास्त्रिम् इत्राविधो वस्वाद्विद्धापराद्देक्षेत्रभूद्धर्भुद्धर्भुद्धर्भुद्धर्भुद्धर्थ्यात्र्वेद्वीता । १० वित्तर्भूद्धपूष्ट्वीता । १० वित्तर्भुद्धपूष्ट्ये वित्राविद्धपूष्ट्ये ।
I III all to be a self and the
विविद्द्शक्ष्रवित्र । अंशर्त्त्रवित्रविद्यक्ष्याविद्यक्ष्य। विभाष्ट्रविद्धावश्चित्रदेश्चित्वदश्चित्रविद्विद्शविद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्
क्रियोस्तर् । एट्वयर्श्वसम्बागेवस्वस्थाप्तम्कद्रम्वस्थायः यस्याच्यास्त्रदेश्यस्य देवसञ्चावविविधिक्य । धेवस्यस्यर्गिस्त्रव्यस्याच्याः

A00 1850 1850 8, 7

भूगश्चरकुर्वतरित्रेस्ट्रेरवत्त्रेरकुष्यूनुर्द्धत्त्रुचुर्द्धरावतुत्रवावव्यव्यत्यर्गाणकविषा र्देश्यम् द्रम्भ द्रम्भ द्रम्भ W हेर्यकुञ्चयश्रधम्द्रधुद्वतः श्चितविष्यक्षेत्रम् राज्याविष्यक्ष्याच्याक्षाच्याक्ष्यक्ष्य राक्र्यकेशनर्द्रमञ्जूषक्षेत्रवर्षात्रम् यात्राप्यार्थे व्यवस्थानम् संस्था है। व्यत्तिकेवायाव क्रम्म स्थान वार्त्र वार्थित दिक्ष क्षेत्र में त्रीतिक प्रधान र्शितार्व्स्वादर् विवर्धनाद्वीताराष्ट्रवाद्वादान्यात् वेद्वाद्वादान्यात् वेद्वादान्यात् वेद्वादान्यात् विवर्धन ঝস্তাদ नुयम मूर्याभर अवश्वत्युं शुश्चराकुरी तार्याची परिष्या परिष्या वर्ष क्रवीर्वश्चरक्रेर्येत्वणकावस्त्र रहेव चेन्यागा ्रेड्ड इंड्डि मस्यविभू निम्साम्यव्याचार्याः । नियरग्रेन्थक्यायर्थन्ययापरप्रकृतिक्या ॥ यर्षक्रयन्त्र्यं अभवेद्भेद्युद्यक्ष्यश् अध्यापर् म्वेवद्येशयत्याद्याद्वत्यव्याय स्यर्गये द्वार्यस्य स्या म्पित्र सूर्य हो र हो पराय विषय द हो ह केर्याद्ययन्त्र अनेवाद्देवश्चे । प्रकागाई 4

द्रम्याग्न्याद्रपर्वापद्रियाद्रोत्याग्न्याग्री *ನಿ*ಣಿ र्ट्यानगर्थक्राताः आवण्यभ्यानग्रेवस्यस्क्रेस्यानग्रे न्यापदेरस्य द्रकायका जुनुना ॥ मरम्यान्द्र्यात्र्र्यंत्राय्यान् पान्यास्य タイツ単文がは कार्याय विकास के विकास के विकास करा है। ने ही ही ही शहुर वक्षर्यान्यहरूष त्रमणेद्रम्यायारागर्चेक्रमञ्जूद्रद्र 300 ज्यत्रियाराज्ञ स्थाया 2

। ধর্মক্রমন্তর্ভ্বাধ্যমধার্থতিক্রমান্তর্থানা स्वपरिश्यक्वाकेव्यर र्याक्षियम् राष्ट्रिय **१**५। एक इत्येश के स्वाधित । याभृतिसर्के ५ ग ५ ५ रहे था नुसक्षय द्वारा हे हुन स्वसुर 셬 स्याप्रत्य**रतश्चित्र**्रह दिवस्यश्रायवार्वरक्रम 湿。 णवे <u>वश्विकक</u>्रमस्या 80 स्रित्रास्थर्भक्षं भृत्यु विविध्या होता चिर्सर्भं अश्वेरक्र अवस्र

शवद्वावावस्त्रप्रस्थान्य नेवास्त्रवा

'स्ट्रिक्सियात्रीयात्रात्रीयीयात्रीयात्रवाद्वाद्वराः

MAIN

刑心へ

9

वादबायद्रयम्

शुक्रकार्यमञ्जूष्य स्थापन

∕‰ **६९४९ईअ५३७०७**७ इनियमक्तरायक्रद्भरयम् देवन्द्रियम् रे विवृत्यन्तिवस्तरर *विद्*तिश्चतिकद्वतिहरू पत्रतिशर्ज्य श्री **175455** यीवीलक्केश्वनर्यविद्यास्तरकात्रमः केल तेता 1 की पर्वेश्वर PARA S इवजरम्भू देवायक देव रक्षिम्बन्ध्य अपर्वे वि अन्यस **अर्थ**णकुरक्षठकुट्ड सुन्। नामान्त्री देशाया पार्वेड

विक्रियर्द्धवा

र्वस्थिव द्वापाय विकास श्रेजन्यस् प्रित्रिक वाह्य वाक्ष सम्द्री द्वारा विचार विचार गुराद्राश्चर ण शर्रात्वकर्**णार्**गः वह्तीसनिक्षणसङ्ख्यान्य मार्द्धवार् हैं सर्

-स्वायां<mark>स्ट्रिकेश्रणस्यर</mark>-

त्वात्र्वर्षक्षेत्रेश्वावेर्द्रम्थज्ञेश

तार्थवार्श्वरवार्थवार्ष्यात्रेवायक्रायक्रेर्ड

विस्थितश्रमायुवरविद्यापावाद्यरञ्जरः ॥

A LES

क्राक्षिक्षेत्रहें वर्ति देत्र इत्राचे स्थान हे अपने हे त्रा है त्रा है त्रा है

0 1

, जिल्हा के सम्मान के स्टूब्स के स

र्वेद्यवंगया प्रेयम्बद्धारणसभ्यः

वा बेदरा स्रयाज्यातिमद्दर्भाणा

अस्यवाय्वि हिम्याया येव वारा पर्

V

, ∞

वर्धिक वर्जिल, इंट्क

क्या हैं में

श्री

ॲंगर्ड गॅइ अर्थे ५ गुड़ा है है

ादिलस्दी

बिरायक्ष्रियाव्यं हैरपंग्री

रक्षेत्रायाच्यक्षात्राहर्याद्वाराह्याद्वाराह्याच्यात्राहरू

अंग्रिट्युवारायस्वय्यम्वरास्यद्वद्द्वारा

म्र्य श्रुव

च ब्रेट्ब क्य घट्टा द्यारा।

न्यास्त्र गर्डे इषा द्वीत दुष्यू ये नया भूषा प्राह

CITY. व्या केट्ट WEESSWS

Image As Per Original Document

मिनेबर्गपर्मिख्यायाच्याचीवृत्र देववासिद्युत्वं क्षयद्वत्त्र्यं हरकृद्रवन्द्वेय। dule बुलक्रिकेटर अन्तुर ३ श्राम रेडिलेब्ह खेलबद्धरित्रवेवनपर्यतस्त्र (C) हरें में क्रेंद्राज्यसम्बद्धियात् हर्त्यावाय हर्वार । हे स्मार्थ्यकृषाया विश्वास्त्रा 34रवन うるいいって प्रश्निक्ताताज्ञ द्रार्थात्र संज्ञु बस्ताया श्रीयान्वर्योगञ्चित्रस्य वहवर् द्ववारस्य राजवार् स्ट्राविया **स्पर्धिरा**ग याम्यायात्रम्य स्मार्गारा १९ 58 श्रिवद्वधिरक्रभागरिद्यासंबंदा देश यद्वान्न वाभादेव स्थादहर्दाची भावा शेविह चनाम्दर्भ द्वारायकार्याच्यास्य स्था ब्रिंगदाराज्य राजसा सेवासा राज्या गावि

स्वाराहक"

135 g रविपदी

Best Possible Image

विवयम्बानु अनुकेदेशस्य हैना एक प्रश्नित्र दिन विवयद एक से द्रा श्री सु वादवासाद्यास्त्रभागान्यात् या थेशा प्राया है। दर्श विषय प्रिया प्राया देव कर देव विषय है के स्था है दिन है के के स्था है के स्था है के स

是这

|वर्षमाविक्रिय्वेपत्रहेवत्रम्यु।

अह्माम् क्षेत्रभू कृतास्

विद्याग्याद्याद्याच्याग्याच्याय्याय्याय्या

र्यक्षर्याया विषय स्वयं विषय स्वयं स्वय

याण द्रायान

र्तकर्रीस्वराष्ट्रियर

जर्म द्रास्तर्यं स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र क्षेत्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास

だいく ひょうこう ひるおもん

V

रिजयर्ग्यक्षेत्रक्षक्षवाद्रम्यविदेवज्ञान्तर्तवायक्ष्म्यक्षेत्रवात्रम्य *7*36 त्य कुर्वय से बर्गर विवास द्राम से वार से मान से प्रति वार में दर त्या वास्त्रप्राद्रभीवारा दत्वा बैटल र्जव वार्य ग्रेवट त्यर वास्त्री था 2 र्णर्क्षेत्र्वयक्षाप्यान्वर्वर्क्क्ष्र्वययक्ष्यप्रमाण्यप्रद्रा अर्वाचरलेखालाङ्ग्रिया क्रणवार्वारातम् रूर्वे वस्त्राय्यक्रणव्यक्त्र

र्यार्थरकेंब्यराश्चर्या

।श्रेअष्ट्रद्रश्चर्यकेद्रयन्थ्यद्रप्यम् वर्षायस्य भ्वत्र्यस्य भ्वत्र्यस्य भ्वत्रम्य

प्रकिट ररप्रेट्वेड्वेवेड्वेड्वेड्वेच्डिंच्याचाराचाराच्याचाराचा स्वार्ट्टवराउडेर

V 01 場場。

विषर्भविष्युविषयि विषयि ।

'स्ट्रियश्चित्रयोग्ययर्थक्ष्यव्यान्य ने द्वार्था।

Ell.

शक्रित्वरक्षित्वभग्नयर्द्धवसत्वा

द्रेर्ध्यक्रवावप्रेशराज्ञित्वाद्यक्रद्वक्रिदेश्वावस्यव्यवस्य पर्वेद्रपद्

। तरस्व के हिंद विकास प्रकृति द्वारत स्थात

र्परहास्वारां यावविविविवाता

ग्दलम्ब्रुवर्गर्

र्भागीवित्तरप्रवादात्।

चित्रमार्वेशमञ्चद्रवास्त्रवाद्वविदः व

तस्य वस्वायरम् देवेव् वृद्धात्य स्पर्यायम् पर्यायम् ।

विशा ट्रीन्वियान्तिस्ति विश्वास्ति विश्वास्ति । विश्वासिक्षि । विश्वासिक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याक्षिण्याकष्णि

यारार्य्याराष्ट्रीयरारं सुरवायीयह

PY BYO

વિજાયાંત્રફ

पश्चाम्याप्याप्यायायायायाया स्वार

बे**व पर्दे बेर्**देश प्रेक्ष

वार र्वस्पदस्यात्वकुद्

ज्याने म्यार है या वा वा स्टब्ह

या शर्मवाश्चित्वत्यवा परत्विर्

न्युरप्राधम्य म्यापार्ष्युरः

नित्रपत्तुगलेट हेर्रापन्न स्वयुः 4 ब्रिसकेराजसीराजेदसक्देशियती DE:

141142

मैन्यम्भ्रप्यश्चार्विद्वेयश्चर्भुद

गेरिवायाश्चित्रस्यात्विस्यायार्वेद्रत्यक्षेत्रस्यात्रत्यद्रत्वेद्रायायाया

तशक्रीयात्र के विश्व के विश्व के स्ट्रिकेस के प्राप्त के स्ट्रिकेस के स्ट्रिकेस के स्ट्रिकेस के स्ट्रिकेस के स

इप्रैरवियद्य प्राप्तक्रीया

विरक्षेत्रभक्ष्मिष्युष्प्राचभ्रेद्वर्द्ध्यत्रद्द्र्यत्रद्द्र्यस्य विश्वदिव्यक्ष्मिष्

| द्वारायाचे म्याप्त व्याप्त वार्य कार्य कराया स्वाप्त कार्य के विषय प्राप्त के स्वाप्त कार्य के स्वाप्त कार्य | द्वारायाचे म्याप्त कार्य कार्य

ठाउप

वर्षियम्बद्धायाह्तवायारान् नेवप्रह्म

न्यवीया ब्रियक्तिवा श्रीयक्तिवा वर्षिया तर्राष्ट्री वा शक्र देश वा वर्षा विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व व

गिर्वास्त्र विकास कार्याचा विकास कार्या विकास कार्या विकास कार्या कार्या विकास कार्या विकास कार्या विकास कार्य

अपरात्रक्ष्विव्यव्यव्यव्यव्य

u

र्ने 1991 त्रव्यद्ययकेत्र स्त्र न्वो यरिके सदीयाः र्जुगानुरायकुर्वेवस्त्राच पाद्रदश्च येवन्द्र तार् वैद्रियसंस्था । इ अधायस्य द्वे पृष्टु पावंशयः न्यापयद्वावीसमञ्जेद्रपर्वेडे यर्केट पर्दर्केवारा चर्वाबोक्षयहर्व प्रत्वेट्यर्पक्षे नदेया मेवाक्षरेयाकागृहेद्धकेवाच्य्रह र्यवासंभित्र विवासिक केर्या स्थानिक श्चीतवावाववसवार्थभगरब्रापूर्वपर जंबारवात्रीर क्रियान क्रिवेर है क्रिययापुरायकेंद्र अस्याक्षणकृषिक्षेत्रस्य विवादित्य-निवादि व्यावस्थात्र्य

व्यवस्था

क्र्वाबङ्गाबञ्जीयम् पुरुषर में वाशु

र्द्धेरपरेर्द्रभाषाद्वीयसद्देश्यासद्द्रपर्द्र देशाहितपश्च

र्वाचयावार अधिवार क्रिया चर्चे

र्वेचडेवा

पानू राग्र्यक्षां स्वास्थान्त्र

६२५६६३४४३००० इत्पः

देवस्यवित्यस्य प्रमात्र्र्याम् अवित्य के वित्र के वित्य क

विवयंत्रेयस्य द्रातेष्ट्रेयस्य विवयंत्रेयः

विद्वेशव्यवायायाय्ये स्वर्धियायाया तण्लेबाक्तिव्रत्यवेबाश्चर 四点 र्द्वेल्यार्यार्यार्थात्रक्षायस्य सम्बन्धः गर्वद्यस्थेयस्यक्षेद्रस्त्रह्वायस्यदित्देश्रहेस्र्रेसः

यद्यापायप्रया

श्चेत्रयुर्हेश्रेर्वेष्ट्रीर्यार्गर्गर्

त्र्यियये श्रीम्याम्यात्र हेन्युम्द्रम्यो अवार्यः

अविवश्या

श्रीवसुरोश्याय वेस

<u>जवावाम्य अवस्य क्रम्य स्वर्हे हे वहें स्वर्द्ध यद्दि वर्ष प्रश्लेर वर्षे रे वर्षे रे व</u>

इंग्रेंस्थ्यूवर्वव्यव्यावार्वियः प्रश्चित्र स्वार्थियः द्वार्थियः विवार्वियः विवार्वियः विवार्वियः विवार्वियः

वेशस्य स्युर्देश

श्चेत्यत् श्वेर्ण रदेवित्वायापवाय वया प्रयास्थ्य प्रयास्थ्य स्था

अपिड्रगृस्ठेरहार्

अ अर्थिईईईख़ुन्यूये

विवासग्रम् विवासह हत्त् ।

र्भरक्षगश्यदह्र"

18

तरविश्वर्र्ड्डेर्ट्व्युश्वर्र्ध

10.

र्ते के दिवस्य विद्या के या विद्या के देवे हे देव स्ट्रिय र ते अध्यात र

ाह **ऐंग्पेंड्डे**हें ह्रबसाया हेड्डिक्टूंड दे

drive

あるはなるないというないないない かんしょうとうしゅん

यास्त्रभाषां स्थाप्यस्य स्थापार्यं स्थापार्थं स्थापार्यं स्थापार्थं स्थापार्यं स्थापार्यं स्थापार्यं स्थापार्थं स्थापार्थं स्थापार्थं स्थापार्यं स्थापार्य

चुर्द्वार्ग

437

मरविपा

545

त्या

19

। विदेशपद्वीत्र विदेशपद्वीत्र विदेशपद्वीत्र विदेशपद्वीत्र विदेश विदेशपद्वीत्र विदेश विदेश

ঞ্জ

1050 150

विविधान्नी स्थानित स्थ वक्रायावयं देशव्यावया

K U

किवीद्वराजनस्वयन्त्रवृत्ति वडी

प्रीरपर्धिरतारव्याप्रीय विरर्

৸৸ড়৸ঽঀৡৼ৾ৼৢৼ৾৾ড়য়৸ৡ৸ড়৸৸ৼঀ

अरितार्करत्र्हेर्द्रवरितिक्षेत्रज्ञाजनस्वेतक्षेत्रज्ञा ए

शिरिया राजा हैया तावर है

विवाधकेषद्वारस्य ।

र्जुराय्वरग्यावृद्धेत्रयरायाववाबावायाययः ।

विभिन्न सम्मूर्ति विद्युप्त क्रिया क्रिया विद्युप्त विद्

स्वातास्वाराष्ट्रस्य भेदान निवारा स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वया स्वाया स्वया स्

क्रवास्वायार्थक्रियायन्त्राधिक

जह्या स्वाह्ने राविया विवस्य पश्

ग्रिक्तुं रश्चर्यते विचित्र विचित्र स्थित

まつめてよりいいできてはいる

।र्षेत्र्रेत्र्र्म्यत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यं

ब्रिटीयर्हेर्ड स्थ्रियसम्ब्रिय

देवन्य देवन्य नाद्यवाना रदे

श्चायस्त्रियं या नार्ति में शुर्मित के स्वाप्त के स्वाप्त स्वापत स

अंत्रम्यम्य ग्राम्क्रप्य युग्य द्रक्ष पृष्ठिषाय।

यक्षणयप्रकृत्याद्वेत्रात्वृत्

चलद्वरायाद्द्रीयावेन र्शर्ज्यरम्सैय्वेषेत्र्यकेष्ट्रश्वकासन्तिताराचारात्रात्रात्व्यक्त्वात्रस्त्रियः वाक्रटकिवाक्षराद्वातरहिवातरक्षेत्रः विक्रवेद्वर्द्धव्यूवातवर्धि *જિ*છે ક द्वरद्विश्वविद्याकेद्वा द्वरवश्चरित्विपर्ववायपत् आर्ट्शियंत्रकेतागर्ज्यक्षेत्रात्रेत्रकूत्र. विवार्यस्वारहे स्वार्थिक स्वार्यिक स्वार्यिक स्वार्यिक स्वार्थिक स्वार्यिक स्वार्यिक स्वार्थिक स न्स्रीविद्वद्भविष्विद्वास्यास्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान देशकरभ्रद्भायकेवरहा क्रिट्रेस्ट्रिगविवास्त्रपद्धित्व मञ्जूष क्रुक्रज्यसम्बन्धानिसम्बन्धाः त्रेत्वशास्त्रश्चरक्षर्द्वेणविक्षर्भव्यक्षेत्रव्यक्ष्यास्याव ने हे दरद्वीद् मेणर्र्गा व्यवस्था स्थारिक कार्यविद्व सहर ने वेस पर्गेद। **व्हेंबद्कुद्रभुवस्वक्ष्णित्रीयस्यम्**। पित्रश्चेम्बर्धारक्षेत्रप्रक्रियस्य विद्वारा अर्केट्ट्रेव स्त्वंशास्त्र पद्मावन्द्र क्रिवत्रेग्नासंग्रीस्स्मेर्द्रविद्वासंद्वासम्बद्धाः विस्वत्रित्या विस्वत्या विस्यत्य विस्वत्या विस्वत्या विस्वत्या विस्वत्या विस्वत्या वि याद्व

पर्मादेशक्षेत्र विश्वातक्षणशक्ष्य क्षेत्र विश्वातम् । इत्राचन वायक्तारकंटिश्युवाहर्यक्ता

सबर वर्ने रहिन विश्व प्रमेर होती

स्वायक्रेल्टिन्न्वायस्त्रेचानगर्यास्यास्यास्यास्य

學學 क्चियराने अयुप्तें वेश्टिवया के स्टिव्यिय के स्टिव्यिय के स्टिव्यिय के स्टिव्यिय के स्टिव्यिय के स्टिव्यिय के स

त्याचित्वचित्रक्षात्रकार्ववत्यस्य

श्राचार्यवास्त्रम् स्वास्त्र

जनवन्य अर्ग मुख्या विषय

क्वार्वेद्ध्यास्य अपदरा

व्ययाप्रत्वण्यापिक्षविवश्चित्रभ्यात् वेरवेद्वण्याकृत्वण्याकृत्वण्याकृत्वण्याम्

अक्रेतश्रेत्रेवश्वेत्रवार्वरार्द्रहत्यस्य वर्द्ववयः पर्देव

र्द्रसम्बेद्वन्यम् अधिवर्देश्यो दिवश्चिरा

कू भग्नेन्द्रवा सहस्रवासक्त अवसन्धुः।

ल्यान हार्या के विश्व

बित्रस्यूक्रान्यवावम्य विवर्षक्षात्रकरावश्चित्रम्य विवर्षक्षात्रम्य स्वर्षेत्रका

।पितेषपवी

वे ने अक्षेत्रके वार्षे स्वश्वेय वाय वाय अक्षेत्र हे न विकास के वर द्वार है

र्यादार् विद्वीवाविगयास्त्रिक्तियास्यात्रिक्तियास्युति द्वीगयावेर विद्यायास्त्रिक्तियास्य स्थिति विद्यायास्य स्थिति स्यायस्य स्थिति स्यायस्य स्थिति स्यायस्य स्थिति स्यायस्य स्थिति स्यायस्य स्थिति स्यायस्य स्थिति स्य

न्वेड्र हें दे दे दे वर कुन महत्त्र कुन हें

न्याचेयाचेद्रचेपतिर्वेद्रवेद्रवेषयायाययद्वर्वेषविद्वेयाविद्रहेब्द्रद्वहेव्यर्वर्वाय

न्यरेषात्हेर्वावंत्रेत्रेण्यान्यस्य द्विद्यंद्रासुः।

देकायाद्वहेब्क्वेक्यस्वाचरक्षेत्रागयद्वायद्ववन्त्रेतः

23

" सिस्ट्रिक्चेनवर्वेद्वेद्वक्ट्रियदेवसा

देत्वश्चित्रयन्त्रस्यस्य प्रमुक्त विष्यपत्रेयम्बर्धिक्रिक्षेत्वयस्य स्विवासा विवयप्याचित्रकृतिकृति *7*88 र्केट्क्रवाक्षराक्रूट्वकेट्स्पा नुस्रवद्ववुष्यस्य स्रोत्यक्ष्यस्य द्यावस्य व्याप्तर्भित्व पगार्याहर खुट खारे यह र के पेट्ट <u>बियम् इत्यस्यात्त्रत्ययार्वन्द्वेत्स्याः वृत्त्र्यम्</u> द्वेद्धरायक्षुर स्री दुर दुन्ति विद्यागा बार्से वर्ष्ट्रिया र्वायत्ये हेर्गर्देश के विस्तर्क्षिणतात्रकेष्ट्रित्ति वित्वर्थिक वित्वर्थिक वित्वर्क्षिया । अन्यन्ति । अन्यन र्युन्यव्यवसागरायुग्रक्केक्ष्यके र्ग्युष्युग र्रीपञ्चावुन परिन्य द्विद्।

इर्गम्र्नेर्यवायं विवायहँ वारा रत्रहरा ह

नेतामवात्रहाळेवासकेवासुरमः

र्ययक्रियार्ड

सेंधुद्वेदीं वेर्यस्य स योःनेयर्थेवदकेदर्थेयः 日とこれをはい 500 . पहेंचारात्रश्लेलः। र्षेष्ट्वद्द्र द्वाद्वयस्य हें दृ **५२/वे५पार्यर्वेर्वेर्यानावेर्वेर**ः 50

केशवर्द्ध अने बद्ध वि

। चार्याद्वितान् स्वर्धिया THE "।णुन्यस्यकुळ्तरांपश्रेम्।

विश्वाम् विश्वाम् विश्वास्त्र के विश्वास के विश्वस्त्र के विश्वस्त के विश्वस्त्र के विश्वस्त के विश्वस्त्र के विश्वस्त के विश्वस्त के विश्वस्त के विश्वस्त्र के विष्ठवायञ्चर्यायविर्वेद्धाराकायतिर्वेविष्ठेदत्दहराया

याने वायक वर्षे देव वायक विश्व वर्षे देव वाय वर्षे वर्षे

न्द्रपळत्थहुग्य

वगर्श्वेषश

दिए-रिपेक्षिपक्ष स्थापनि स्थाप

हिद्देवहर्वज्ञेजपर्श्वेयस्यस्यस्यस्य स्वयं स्वयं देवन्य देवन्य स्वयं विवयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं

प्रिश्नियश्राश्चित्र्वार्य्या स्थित्र विवयम्य स्थित्र विवयम्य स्थित्य स्थित्य

निसर्जित्रकार्वित्रक्षित्रितरायुग्यसक्ति वित्रायुग्यसक्ति वित्रायुग्यस्थित वित्रायुग्यस्थित वित्रायुग्यस्थित वि

WIEFSTY

नीर्युट्टाणड्रीगर्ग

13

ब्रह्में क्षेत्र

Best Possible Image

Best Possible Image

न्यायार्वस्केवस्य विद्युत्तित्वः

क्रित्यक्ष्वास्विध्यस्पद्द्युद्द्युवस्यस्पद्धत्त्वस्य

दवा

প্ৰশ্ৰেত্ৰাৰ্থনৰ প্ৰমা

100 मुन्यरपर्वययुष्य" 50 वित्यस्य अरस्य अर्थक्ये भेर्न्य केर् र्परावर्धित्राच्याच्याच्याच्याच्या स्वायन्द्रवर्षणि पुरस्य स्वायः |ईड्डेबर्वरवावव ्रीयर्पात्रह्मेर्प्यक्रवार्द्यायार्वावयार्व्यक्ष्यायाय्यक्षेत्रेय्वत्र्येवयायर्क्षेत्रम् व BISP. बिरक्कर्यहर्ने अधिक के अपने विवासे विवास **4**3 クグノ 日本日本はいっていていると स्या उद्देशक्वा सुरा निवस्य शुद्राता । **पन्यमुः भर्यकु भन्यन् अं न्रह्म् या स्वाप्त 4**

रवावाबर्सुरावर्धुर रुएकेरला

<u>चित्रस्</u>रम्थश्युश्हर्परपश्रः

र्देश्यप्रयोगवेद्यद्श्वः स्थानस्य द्वप्रयोगस्य

रोसराण्यव्यव्यवस्य

읭

किप्रविद्वादिक्षाति स्वतिक विद्वादिक विद्यादिक विद्यादिक

विस्त्रेवायपार्देश्वरश्चेवाश्चिर्धारास्त्रेवा CV "द्द्वपुद्वववद्वशच्चराप <u>ज्</u>रु० क्रियुठ देवश्वरायाचा ।वट्रदेशक्ष्यक्ष्यक्षेत्रज्ञा

कैंशवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्यायवर्श्य

बर्चेवयर पुः द्यारपा

यद्शक्रयक्षेत्रेद्रस्याक्ष्ययद्वित्यस्याद्वेत्र्यस्य द्वित्यस्य वित्रव्यायस्य वित्रविद्वात्यस्य वित्रविद्वात्य

187753313171

82

ब्रियशान्त्र युक्त प्रकारा क्रिया विकार मान्य

ये वित्वश्वद्

निर्मेष्तर्ति वैकेष केश्राह्य तर्हरी

स्वावापयप्यवित्र संस्थित्यवाया गर्दा देव वित्र प्राचित्र विवाय प्राचित्र विवाय प्राचित्र विवाय प्राचित्र विवाय

वनश्चित्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्यात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चात्रश्चा

प्रम्याप्रयाप्रयाप्रयाप्रम्याचे द्वेष्ट्रिया विद्युष्ट्रिया विद्युष्ट्रिय विद्युष्ट्रिय

<u>जिस्युवाय दर्भ के कुष प्रवर्</u>ष

शुक्रवाधवहायत्वायहेक्छेर

Best Possible Image

到

*78*6

記録を引

38 L'ACMAN 神经

वार्यासंदर्भपतिश्चात्रसम्प्रेशपवितृह

वाद्यां सुप्रधार्यो

\$2

। पश्चिद्वियम्पिक्षण्डेर्वेद्पणके बर्वेण ने रुषण्ड्वम्येके वर्षे स्कूर्

वर्गन्त्रक्रवयान्य इत्रात्र

क्षिव सुद्वीतलक्ष्या

Vic

क्ष्रकृष्ट्या प्रस्त्र श्वाळ्याया प्रयोग प्राचित्र

देन्द्रश्रेण वृद्धेत्र त्या विवास

अक्रिस्टिवर्स्वास्त्रम्भक्षाव्याप्त्र्यं रवत्त्र्विवार्ष्ट्रविवास्त्रम्भव्यव्या

वार्यस्थ्र इंश्वेषण

30

⁄જી! むくなり大きゃくくるからい

Best Possible Image

र्वर्वर्वस्त वर्षेत्रप्राधित्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्रप्राचित्रप्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्राचित्रप्रप्रप

गर्या द्या

<u>स्वाक्षक्रमा</u>

मूद्रविक्रायाणका पर्वतिर्वेश्व

वत्तीय के प्रतिप्रति विद्यानिक विद्यानिक विद्यानिक विद्यानिक विद्यानिक विद्यानिक विद्यानिक विद्यानिक विद्यानिक

नायम् । प्रदेशहारा

क्षेत्रेद्दवास्त्रअस्त्रेवविषयपश्चरह

वशस्य पर्याद्वर वस्तु सुर

वैपारीकार्टेबी मेब्र्स्ट्रेस इंश्

र्यत्योशस्यंश्रम्बर्भायत्यर्यस्यः

अन्त्रीरसेवार्ट्यूत् कुस्ताम् वस्त्रीत्रत्ववायः

रणप्रधाने सङ्ग

350

क्राश्चित्रहों

शुरायद्शक्ष्यं वक्ष्रिविवस्थायक्षेत्रः नेरायप्ट्रि

दक्षियदावरवार्द्धवर्षेत्रवाकायद्वाद्वरहेत्यद्वाद

न्द्रपृष्ट्र द्राध्यम् वर्षे भुक्षाद्रावे सु

लाड्डे ्रेड्र ट्रिड्रिट २ \$ 500 C NEWA \$4.00 E NEW DOWN = £ 68 2442 E द्धं शिजत्तृत्धः विश्वतः R1.3 = 500 NEW STE अंदर्शादाय,श्रीस्ट्राज \$47.7E D.

35.58

らんながま

NO.

इ

Best Possible Image

श्रेरवश्रेद्रयवश्रेयच्य 100 B **533** 90 र्हे द्रार्पे से स्पाने व रहे धीवा वी शस्त्र व न्यास्ट्यान्युठसा Cape. ~ विवाश द्वीवायक वाग विवाद वे स्वयाद ने संगया देहें के दो ते शुराव देवे त्या प्राप्त के त्या स्वयाद ने दिश प्वाहितर्थे देशी रिविधावार्यया युवावाते सञ्ज्ञा द्वाद्वाद्वा स्वास्य स्व स्व स्तिवाते स्व व्यया.

विचलवृत्रेवश्चेतः सुर्वेशयविवारः नेट

155रदर्दे वें के या क्रमण्य या देश प्रविद्युत्त वा वा वा वह

€.

35

द्रश्वरस्थायास्याकुद्रा

의

वित्रायम् स्वाप्त्रम् स्वर्धान्यस्य स्वर्धान्यस्य स्वर्धाः

पश्चित्रभाग

म्बह्याया मेलक्षेत्राय स्वक्रम्यदेवस्ह

यपंत्रभवादव्यंवायुश्चर्याद्यं वया ग्रीचर्यया प्रदेव हवाराया

न्युगर्निकस्यन्यविषयपरिक्ष

र्त्त्रे न्त्रसापरसासुक न्यम् अन्यम् विषय् स्टिन्न विषये

श्रीर्यः स्वराष्ट्री

हिट्टेन्ट्रियासुअखेवार्पेयं स्वत्रं

स्वास्वायायस्य अर्थन्य निवास्य स्वारा द्वारा द्वारा

वान्ययस्यस्यस्य

Ya

,तम्ब्राम्यक्षप्रस्वेत्रययाचेत्रहेन्ययायम्यक्षेत्रययायः ।

विविधियार वर्षित्र द्विकार नेयव भिर्वा

म्युखप्दकुलपह्न प्रवेश

द्वेंद्र्यक्त्यकेष्ठिश्रम्य

र्ट्यकिश्वेश्वेश्विश्वेश्वेर्ययायायवस्य स्वर्धिर

4585

36

W

Best Possible Image

मुंशयतर्वययर्व्यत्यद्वित्रद्वित्यत्वर्वात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

2

क्षेत्रश्रीर्भेरवयक्ष्विद्वययस्त्रात्यस्य न्द्रत्ववत्रप्द्र

वयाउँ

नर्वरेश्वभीगर्भैर्वेद्विन्

इस्क्रिकार्यक्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रि

38

रतायतीयियात्रायाय्वेषक्रीव्यक्ष्यं व्यक्ष्य

पर्वदेश्वरदर्द्ध से अध्यक्ष स्टार्ट्स से अध्यक्ष स्टार्ट्स से अध्यक्ष से अध्यक्ष से अध्यक्ष से अध्यक्ष से अध्य

र्वरक्षेवीयश्चित्रके स्वास्त्रके स्वास्त्रके स्वास्त्रके स्वास्त्रके स्वास्त्रके स्वास्त्रके स्वास्त्रके स्वास

विवासमान्यवासन्य स्तर्भात्रीतिः

ब्रायक्रवर्ग्यवार्ग्यन्त्र

3

वयर्विग्राष्ट्र

500

エロッドはいいまからないないないのできないだけっています

श्रुवापर पुराश्चा स्वाधिक द्राया स

अभयत्। तर्विवायात् विविध्वायायाया क्रियास्य विविध्वाया क्रिक्रवायास्य स्टि

त्रुवायद्वासुत्यद्वार्वद्व

इत्वेद्यात्रवर्धेतरदेस्य पार्टित न्वयवसर्वेषयेभे वर्षेत्र । भूगमन्युः क्षित्रवासम्बद्धाः **∵**%** 5 र्पर्विडिन्ह्यणयशि र्रश्यार्गास्य द्वाराष्ट्र *%र्याशस*हर् Gæa!5 रेग्रेशकृषानएयाव्यवित्रकेसेन्द्रश्र *त्रेश्व्राच्य्राच्य्र्र्य्य्य्याम्वर्ष्य्यः* पळेबेर्द्रहेत्स्रुबळ्णव्य्यप्रम्भवाः হা يتكار रन्यस्थापत्ववर्षेर्व्याप्त्यस्य स्थाप्त्राच्याप्यस्थ <u>पर्वेग्र</u>ीका 03 CX CX विव प्रमुद्धार्यं व्यान्यात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्र क्रम् अञ्चारम् न विद्याग्यायायायायायायाय दिलाग्रेटलाइकार्डेनाठ्यस्य प्रश्नेत्र ग्रिका स्वत्वस्य चाराद्यास्थ्रवस्थ्य । इन्द्रिक्ष्युक्ष

6.25

山空公司...

7/21/

देवलयत्वेकेरेबर्दर्ध्यद

u

39

क्रिमन्द्र<u>।</u> विवासित्वास्त्राद्वारावेह णुः हैं रह्ण रूर हुन्गे छाड़े निकुहुँ है विश्वद्रविद्यान्य द्वात्र द्वात्र ।

ব্যান্ত্রী প্রত্যাতিমন্ত্র প্রতিষ্ঠিত ত

र याग्रद्धायर् वर्षर्वर्ष्ट्रताह याग्यत्वयर्ग

... देव्या स्त्यो**लेशः** ।॰

गुरुश्रिगुरुहिरो। प्राप्ते

स्योद्दर्ययार्थ्यद्वेद्यद्वयः

्यायमधन्याद्वाद्वाद्वेळवर्षुष्ट

उरागह

गुर्गार्गेश्ट

विष्ट्रिय प्रस्ति विष्ट्रिय विष्ट्रि

3

6

JUNE

भूगद्वर्शी अर्डिड्ड इंड्ड श्रिम्इड्रीया इंडिड्ड

श्रुंबर्दर्भश्रः

द्वीदुन्ययाग्रावेद्वेदस्यः

न्वा इत्रहेण ये देशीय राष्ट्र राष्ट्र

13.50 E

<u>ाह्यहर्ने स्थान</u>

श्रियं द्विद्यागयः

र्भिर्म्य पुरस्त लेखाल की द्वार स्वतः

श्रुवार्द्धाणः

यां भेर्त्या रहें वेर् अंदर्श

मुन्यस्य स्वाद्यात्र्यस्य द्वीत्राद्यायः

कुट्यद्राधेन्त्रवाक्षेत्रदे

श्रीत्यभूतश्चित्रात्रभगप्यवर्ष्ट्रयप्योद्धे व वाकर्द्वरवेवसत्वाहर्द्वाहुसङ्ग्रिश *7*658 र्षण्यावद्वद्वर्षयञ्चरभग्रस्यास्यार्यस्यविस्त्रिंद्र्योः स्रमञ्जावेयपायस्य ग्राम्याच्या म्हर्म. मार्याकर वर्षित्र वर्षित्र वर्षित्र द श्रीत्रायस्त्रस्त्रायस्य स्वर्धेन्यव्या

राष्ट्रहरूश्यादः

न्यान्य न्यान्य स्वात्वाचित्रयान्य पारे पञ्चन्यान्य स्वात्य स्वात्य स्वात्य स्वात्य स्वात्य स्वात्य स्वात्य स्व

पवस्ति हो रहे वे वे वे विद्यालय विद्याल

श्चरण्याचार्यस्य

मुद्रश्यविवायेष्य स्वापाये थया सु

देगरायुद्धवाराष्ट्रीयेत्रयत्रद्यविषयरवयश्चित्रायद्यस्य स्त्यस्य स्त्यस्य स्त्राये स्त्राय

श्री के राजपश्री

4

1 SA 1 SA

स्तुः ५३-४/३५/११ स्रु

र्वकर्ध्याद्रेयत्र्यं याव्यक्षयावर्त्यत्त्र्यम् याव्यक्षयाव्यक्षयाव्यक्षया गर्याप्यस्य

প্রবাধ্যরের বিশ্বর্থ ইন্

यग्रेन्पन्त्यस्य प्राचीत्र

वायत्य्वयद्भित्राच्यर्भर्भद्भित्यक्ष्यर्भित्यक्ष्य

2002

वायवर्द्धवर्द्धवर्द्धवर्

रत्यह्यद्रभग्न

स्यायायायायायार् रहेवाहेवयके द्वारे द

स्यक्रिये यह प्रति हैं यह

र्वाठग्र'

स्रायावयावया ।

। विदन्दर्भवसम्बद्धस्य विदन्धित

न्यश्रकरवायश्यभ्यस्य स्वत्यः ।

स्रेन्येन्यगथ्यक्षेयायगर्भेन्यक्ष्यग्राम्बर्

यराभक्रवावादवाववश

यद्गापण्यद्वेत्रद्व

對

पर्वयाण्याप्यार्गर्गः

इन्द्रगंभग जेन्द्रन्त्यक्ष्यक्षे

348 । अयावनपर्याभ्यसम्भाष्ट्रम् पर्याप्तर्मिणः स्त राज्यन्तर्गास्य स्त्र निहेराषुट्योः नेहा स्टिनिवेश रहें द

WOWSE -

श्चिर्यर विश्वेद शुराया सुद्र पर प्राच्या या सक्या वी द्राय पर

ब-र्गावबन्द्वन्ध्वन्यन्द्रन्

क्षाक्राम् हेनायबुद्दान्वया भन्न हेन्द्र व्यति

यार्गाद्वार्य्वः

क्राज्येनुद्रायमायन्यकेन्यायं

. ध्यान्व्याहे -

विव्रविद्वातम् वार्ष्ट्यप्रवास्य

とととではあるない

वर्षेट्वीयोध्वेरावस्व पश्चिपविश्वेरवस्येरविर्वितिविविश्वेष्णविर्वेरपविश्वेरविष्णविर्वेष्णविर्वेष्णविर्विर्विष्

\$40

प्रकार्य प्राप्त क्रिक्स क्रिया में में

हैं। कुराजी 意りあ णग्युअनागर्द्राच्यु

बिह

पठभाग्रेय दराया स्वयंद्र या दराया ५५

केंगकी पुरिताः पर्देश

र्देशकी पर्वेयप्यद्देशविवस्त्र स्था ष्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रि कूनक्षित्व पर्यानेबर्गातक्ष्वं वित्राहित्याः स्यातिकः स्रित्रेत्व क्रम्पाविष्पूर्वे त्यातिक्षेत्रते स्थाति क्रिक्षेत्रः मर्ज्यास्य प्रविधारेगारियने स्था अपयाप्याः महिलासूरपो मेला अस्याविवः निर्देशकृतः अभीविद्यदिवः केंग्रिन्दिद्राः मर्डेग्रम्बन्धराकेष्ट्राप्तिन्द्राह **यन्यु**वाः यान्यां आदित्रद्रद्रप्रकारादः वात्रेशश्रुद्धाः नेशः अद्याविदत्रद्रिः

यर्केवणःवेशक्तितर्वेतः ग्रेर्केदेशरमः तामयर्द्देर्तमत्ववविवर्धेतः नागर्वरः त्र्याव्केष्युविवनिद्धाराणविव

क्षेत्रह्यास् रिवेर्ड्स्य १६

ग्रह्माय्श्रेपद्रव 着 8648

इन्नेस्यानेसर्वर्षेद्वर्तिन्त्रेत्वर्नेस्वर्तिन्त्रेस्यान्यायात्राम्यायात्राम्याया न्तुः द्वाराव्यस्याद्वाद्वावर्गवर्गवर्गवर्गवर्गा ।इंह्यक्रद्रश्चित्र प्रचट्यप्य प्राप्त विद्या है तप्रोध्याप्रदावास्त्र स्थान

अर्थेरिक्रयावयहेरिरियाक्यविषये नेवर्धे स्वाधित्विष्य

द्यार्थितवस्त्र स्त्रित्यार्थः याप्त्रियात्रास्त्र

रियामान्य विकास स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन

देशीवालाग्रीरणानेयज्ञित्रहर्द्रश्चिश्चर्द्रहर्

सम्प्रवितेई अद्र व्यवित्रे वेपावस्थ

र्युक्टर्देव स्वापादमा मेगयाया वेद प्रापेश देन गर्पेन का कित्य स्थित

विरेत्रहर्दिर्वेद्रप्रभी स्वर्धिय विर्वेद्रप्रयाचित्र विर्वेश्वर्षित विर्वेद्रिय विर्वेद्र

てするとなられていていますがらかいから

प्रमायेशक्रवाशयक्टितामारक्टियावश्रीरेया....

15देशकावर

習到至何意

18

श्र्व्यक्र्वायाया भेगञ्चनकद्योदय श्रुद्वावम् द्वायम् वर्षायाय्ये व

म्ब्रायहैवाव्यक्षेत्वारावादेवाद्यदिवादार् हैवदान्त्वादा देवादाक पर्देद्यवीवात स्विद्यादिवादिक

पर्वेग शिंदा

3100 366 8 श्चित्रहार्यात्रां भूतार् मुस्यद्याद्दर्शदन् प्रेन्थन्यपति हुनू पिन्दें। 12वराश्चरपार्छन्यद्वसारम्हेत्कद्याप्युराष्ट्रिया क्रेयादर्वे वातर्व सुर्वेश्वरायम्भगद्रपत्रप्यस्य विविद् न्यापन द्रणपं अर्चन्यः श्रेरणः स्वा सेणः इपः अः

तार्यायविद्वे दुर्वे न यान्यस्य स्याप्य प्रमुद्रियः

धार्केशायक्शार्वा ग्वाचन स्थान दिस्सुका

O.C.

发彩

देवद्ययदेद्वीयंत्रवेद्यतेषुयरांजित्रययंत्र्वि

र्भागास्थापर्गाकुभगुवर्द्धपर्गान्दिः

मद्गद्गरायुष्ट्रस्यव्यव्ययम् अवन्त्रे

न्तरगात्रुयम् इदेहोरळ ५

イクイクシャイクへいき STOP SO

श्रिप्यं अपार्याताः

シードログルがんがんしょう

IX(I) =

बैबें ५ र है ।

यवंद्यवंद्रम

र्जुड़

्रेड्ड इस्ट्रिट इस्ट्रिट

422

オイスのインスというかん

\$ 55°

Z = (20)

75]

5 20

यश्वेदशयश्वश्वश्वेदर्वश्वीतीयः

मुअन्भूपार्श्यप्रपास्यास्यास्य

८ळ्या राज

राउँ

स्निप्रज्ञान्त्रवाद्यश्र

मुभूद्रप्राध्यपाराय राज्या स्वा

मद्युवा

8413 युर्गुर्ग्या ह्यास्य (०) न्नसङ्घरपञ्चर्या (रवेदेसः स्टर्मणः MŽ: 55.6 নুষা ভ্রমের বার্যার ह्याळवादाः स्वाद्यायः याः इत्ये ナイズロミ , स्ट्रिक स्वाळवायाः 3 MA श्रुप्रयाद्रणहेंग 325 मैंदिशश्वेद्देश हैं।

कुंपुर्द्ध**यपु**रु

हेगळ्गरा=

₹₹₹₹

550

सुर्वस्यद्यह्यां यवाव्यव्यव्यव्

र्वज्ञान्य वर्षात्रायंबाह

50 C VV VV र्यट्राक्ट्रियाद्यान्य रापिश RAS विविद्कुणय 1点と会とを見るない。 हुँ दूे 学业安立公司 S > विविक्क्यरेव्हर स्या देवार्येश सक्ते स्याप्त याद्या रादेश मुङ् इंद्रिक Mã ह्याळ्यारा W 7 5555 मेंबाक्य क ष्ट्रिष्ट "गाँधाउँ= वेद्यंद्यद्द्द्वव्य पहेंग्द्

केंच्ये थुं छाड़ेर 1550 1550 J338 म्पार्थिक । 10- 410 ल्लिब्र्यू अर्थेः भेर्नियद्रुथस्र् द्रियस्त्र विवयस्यः **32** 分 その空の公言 いいでかりのイクタンにいって विषय्भेरण र के स्वार्य देश र जायों स्वार्य है । कूलिन्ताता हो है हैं हैं 的自命包含 **X**(**X**0): 多元 व्याप्य प्रताय विषय स्वापास्त्र युक्यरक्षानुन्ध्यान्त्रियान्त्र वार्याप्तान्त्रयान्त्रयान्त्र विवाशहरीकृवीर्गिर्गाप्यवन् Su

35.00

प्रतिवद्यवीव द्रयाचैक्षित

रेंनेब्रेंद्रायीद्वारद्व्द्रातेषक्ष नद्यविव्याययप्रदेशक्द्रक्षेत्रक्ष्याया

5

場 THE .

क्रियान्विकार्त्वावास्थवाद्दर्वस्य व्यवस्थ स्वावाद्द्वस्य स्वावाद्वा

र्वेर्ववस्यूर्यन्त्रम् विष्यूर्यं विष्यूर्यं

पहरुद्देशक अष्यागृह

निर्वाक्षाद्वर्वाक्ष्रिक्षिणावर्वित्वर्धः स्वाइणक्रेर्नरव्यः सर्वायवाग्रेः

नडड्रडन्स्यहरू

या अविद्युत्ति । या अविद्युत्ति ।

MEHS 48

न्तर्वभवग्रद्भप्य अविविद्या विद्या विद्या विद्या प्रति वि

5-2-2

दिस्य वित्व श्रुद्दाह्म या वा अपने वित्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

555

ट्रेंट्व्युव्यवस्थवह्यायरः । %

् नेस्नर्नेपस्यदिपवेपन्यभिन्दिस्य उद्ग्रह्ण सपस्यपा

याह्मणयन्यभाषाश्वापति

हमसहेनेन् रिव्यूरेतर्भ भीप्राजितिहरेत्वे नेन्त्रिर्धियां प्रत्या भीष्य हत्र उत्त हत्य वर्षित्य प्रत्य प्रत्या प्रति विविधित इत्येशवितान्त्रेशद्दशायेशवद्वशायेशक्ववश्चर्वात्वर्दिद्वात्तित्त्रात्त्रित्तावितः क्रिजीन्त्रित्तात्वावितः क्रिजीन्त्रित्ता निक्षण्याने स्थानितीय प्रतितीय प्रतिक्षण विकास स्थित । स्थित स्थित स्थान क्षा प्रयानिकारारायकाम् मुस्तिहिनाहिन्द्रभेशकारो प्रतित्विकान्यार्थे वार्यस्य विवस्य व

णत्येन्वर्त्त्र्वस्त्रम्त्रीत्रत्युर्वरणन्त्रीयव्यानविक क्षाववर्षक्ष्रित्वर्त्त्रीत्वर्वाच्याव्यानविक क्षाववर्षक्ष्रित्वर्वे क्षाववर्षक्ष्र हरदमत्त्र द्वारिक मार्थिया देवा हराय के यह मेर्ट हरा यह मेर्ट के देवा हराय के विकास के वितास के विकास के विकास

साम्यानार्याच्यः श्रीयस्थान्तः अवस्यान्यः नेया व्यात्र्यं नेया व्याप्यान्यम्यान्यम्यान्यम्यान्यम्यान्यम्

नेवनाभ्रम्भविष्ट्रित्वर्देवज्ञेण-नेभन्भ्रत्यात्र्यं वर्ष्ट्रत्व्यश्चर्यस्त्र्य्यः हेन्द्रव्यश्चर्त्वात्र्यः नेभन्भेत्र्यः नेभन्भेत्र्यः नेभन्भेत्र्यः नेभन्भेत्र्यः नेभन्भेत्र्यः नेभन्भेत्र्यः नेभन्भेत्र्यः नेभन्भेत्र्यः नेभन्भेत्र्यः निभन्भेत्र्यः निभन्भेत्रः नेभन्भेत्र्यः निभन्भेत्रः निभन्नेत्रः निभन्भेत्रः निभन्भेत

न इत्रहिंद्रस्ववववकः रचरपञ्जित्रयाच वापदिपहिंगहें व *ં*ક્ક W न्यस्केष-कर्मार् विराविरवात्रवात्र व्याप्त क्षेत्र विरावि विवस्तर्भितावार्द्रमात्रकाश्वरवाश्वर्तवाग्वर्ता वर्वारक्केररकुणाव्यवस्थारमवर्ष्क्षेत्रवयान्नेशक्यान्यान्त्रव्यान्त्रव्यान्त्रव्यान्त्रव्यान्त्रव्यान्त्रव्यान् भीवार्थकाथियाची रेमचापराखेर परन नेपकाद्या सम्बद्धा रिवेपर्शिक्तिमार्सियवर्षेत्रेव्यिये विद्यासमारक्ष्यः वनदेश्वनेवर्युप्तस्यक्ता ্ষেক্তি ক্ষা

,दर्बारायस्ट्रदारोहेत्रसार्वेहेद्वर्द्धवादिवासेत्यप्रविचर्द्धवर्द्धवास्त्रम् वास्ट्रस्थानाद्वेदवर्द्धवार्यस्था

माने रक्ते वास्त्रधा क्ष

Lagor

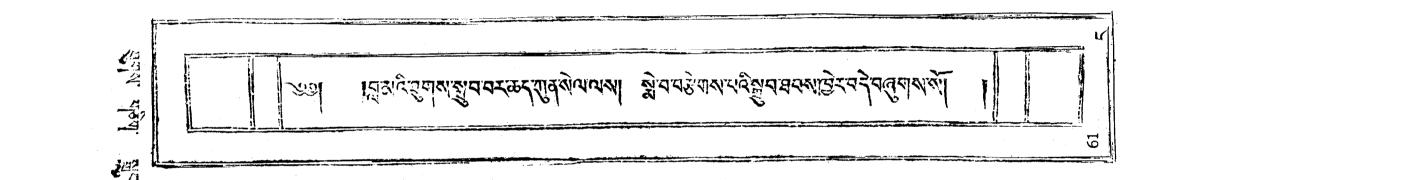
Blank Page As Per Original Document

मोस्ययव्यक्षस्ययार्ष्ययम्भवस्यक्षस्ययार्थ्ययप्तित्वप्तित्रम् व्यवस्थित्यर्श्व ह्मेर्नेट्रीयोगेन्द्रियाने अवनिद्वत्यान्त्रियाने अपने के विष्युत्त्रियाने विष्ये अकूब बर्ग वीचारीय देश शहर अवायाता मारेवचे त्वाह के दियत के वस तिर्देश्चेर बच**र्श्व**रणसम्पर्द्णापरवडी। जिंद्व लुखा नियाद्द्रश्रिमार्गरम् यात्रात्वे वेद्ररह्मा

पद्चाव्यव्यवस्थायवेथस्य स्थातस्थाय**य वर्षे**णा किर्शिक्षेत्र विदर्शिक V र्राय्सा हिती । वेदिहेर्द्वीखुष्युं देवेदवण्या निर्देशकुर्वयन्त्रसीन्तिन्यसम्बन् । जया (1) 4 3 2 W श्रिमञ्चीय इतार्वदणहेंवी बिवाक्रे वा देवा विक्रा वह त्या वार्तव के विक्रा के विद्या वर्ष क्या विक्र विक्र विक्र विक्र विक्र विक्र विक्र मिन्तरीय विरस्तिन नेपारी र किर 四方经验 र्ग्यम् व्यवद्ग्यन्य स्ट्रिकेस्य। ् हिन्द्रर्स्त्वीयम्प्रवातक्ष्रीयत्र्रिवहर्षक्षर्यद्रवाद्रवेश्वतक्षर्यद्रम् वाद्रवेश्वर्रद्रवा कित्यात्वेषस्यिष्टिश्विदेशाः वर्षात्राचारदेवस् शिवाध |मूर्यक्षर्य राष्ट्रकृषक्ष्यास्य राष्ट्र द्या श्रिव के देश वा श्रद्धिया रा की देश के वा वा श्रद्धा しばているというないないないないない विवसकर्तेष्ट्र द्रेष्ट्राचरारेणश रिस्की श्री देश श्री देश ही देश है। हिंहेले अराद्धाद्दाद्दाद्दाद्दाद्दाद्दाद्दा रित्ववृङ्ग्वक्ष्रिद्धार्यक्ष्रियार्यक्ष्रियन्त्र्व |एवर्षर्वराज्ञः | 85 | दक्षरायर विवास र विदक्षिण हेर राग हुआ

।जे.जे.लक्षेत्रस्टिनुत्र व्यवस्थान पर्युरा 158160108V াদ্বীশাইন্| **।हेरतहें दर्शे अरा ५५०** हु देहें र 13क्ष्यतेहें देवहें त्व हें स्था 23.2 । बॅर् बेर के वह वृधिवेर्तो रहरू क्रिसक्रीलेखस क्याम्य स्ट्र

|**र**त्तुद्देहें सुँचेवसबर| | **मे**ण्य प्रकृतिक स्त्रित्र V विश्वस्त्राध्यम् म्यान्य विश्व द्वायश्यम् स्वर्धित्रे स्वर्षे |द्युंगाराक्षद्रकुटल्विह्याक्ष्ववर्षेत्र । वेशयहेर्यदेश्टरस्यव्ययस्यव्यव |おとれてよくまとれるとままりかる| । बैट्ट्य शहुवा स्वास्वा स्वास् の記念 15ने वर्षपर्शे रावक्षियुं दहें हेवला शिक्षकृत्र शुर्द्दरवर्षे स्विन् स्विन् स्विन् । यद्वले स्ट्रिस्य में त्र प्रेस्रिस वरक्षण माहात्व हुत् स्व श्चिरवश्चरवर्षरवर्द्धवाश्चरवर्षण्या । वाश्वी कि र्रं ता के तुरेशक जा सक्त त्यां धार्म ता अवागा वीट्यूल्वीटर्जुवाबावुरायद्विहिनकरक्ष्वेच् विश्वत्रद्रिर्द्रविश्वाक्षी बिदिम्योश्चित्रिवक्षित्रकृतिक्षित्रद्र्याश्चरविद्यक्ष्य विश्वत्रद्र्य वाश्ववक्षित्रकृतिव् विश्वभद्भवित्यक्राम्यक्रम् रित्रु अवद्यास्त्रम् 10548



येग्रार द्वाराया विवाद अश्रह्मेयश्रेषद्रम्यसेष्यप्रवह्नेष्ठ दें No (K. 1 नवस्थित राज्य क्रुवेश्वरायश्वराद्यः राजपन्यकेन्श्वेनवायागरपारपारपारकेन् क्रात्र वर्षेश्वक्र क्राया हार्षे वर्षे पस्यवादा श्रीत <u> त्यां तय इ.जं रत्य वार्य तय क्राय त्यां राष्ट्र</u> **स**च्युद्यकी **ब्रुट्ट्युष्ट्यास्ट्रिकेन्द्र्यात्याह** क्वायाचेन्यापत्थायहराष्ट्रम् स् देशियरात्राक्रीप **स्द्राबिक्यावराक्षेत्रदाक्ष** 00 **श्रिक्षण्यस्य स्याधिक स्थाप्त स्थापत स्य स्थापत स** ,~~~~ 0

Best Possible Image

विचित्कताचित्कतायके ह ब्यान्य क्षेत्र स्वाद्य क्षेत्र स्वाद्य क्षेत्र स्वाद्य क्षेत्र स्वाद्य क्षेत्र स्वाद्य क्षेत्र स्वाद्य क्षेत्र अस्त्र्वियद्वस्त्रायाः श्रुवादक्त्यप्रपूर् **પશ્ચેત્**જેલ્લાન **वे**द्वेरसंभिक्कंत्र्युंगः च्रीय-दिश्वीय दर्शन या श्रीया श्रीय है अवएन सेर्जन वर्ते न्द्र नर्भागर्र ্ৰশ্ৰম ल्लाश्रुद्धाः श्चरपार्य्यत्वर्षाययवाशयाळेत् मेंस्यास्वर्धियास्य स्वास्यास्य स्वापते द्रीप श्वास्त्री व्यक्त वर्ष प्रत्य के स्व 3417 क्रि.बैर.बीरमध्तेमध्ता बैर्ड विश्व कामानिकिया विश्व णयार्के द्वीस्थानस्यास्य स्वत्वद्वाराणाय्यी **राज्यायान्यापान्यपार्** । यद्भुन के बक्द देव के बेर के बाद के देवी यह का का का का रिटरमधेरक्षामक्ष्यिकः वश्वस्य स्वा कि विश्व विश्व विश्व विश्व देत्रक्रव्यवस्तुरचेत्रयम् । वृत्यवस्तुर शैवक्राययविश्वास्त्र विश्व दिस्यमार्सुराष्ट्रेणसास्य स्वरुवत् । प्रवासकेविवे मोने बाद्य हों वा बाद्य दाय देन वा वा वा ह श्चित्रं वश्चित्व वश्व उर्देश स्वायम् स्वायम् প্রথমধ্য

स्यार्ट्स् म्याप्य विवासम्पर्दे **चित्रवायन्त्रियळेन्दारहायः** *૨.ઠેનધૈભોનું.*... यवाबर्धेश्वराज्यायारविवादिवादस्यादः 130 **स**्देश्यानीश्चापनश्चायम्भेत्रस्य स्तित् नेक बुंद्रिक्क कर केंद्र वहुंद्र र्द्ध निर्वत्ते न वाया ना ना ना निर्वत्तर् पर्दे ह क्रिक्र के कर के अध्यात में दिन के कर महित्या |त्राचीलरूबेक्र्वलाजेर्जनब्यक्र्यह्रेटिक्राव्टल्ट्निस्त् - स्रविद्यात्रायिक्षे रन्रकृषिन्वयिद्वायिद्वर्थात्वर्थान्यः तुरम्वरन्यायेसस्य मृत् 49.42x16.182.8 **ষশ্রনা**রবারীবর্ন্সগর্বনেরিরা शुर्वाञ्चन रूलपार्यायन्त्र राज्यायायन्त्र मान्त्रवेद्वायावन्तुःरेवाक्की स्वायम्बर्याने द्वात्वम्यक्षेत्व मेन्द्विवकन्ययेवायववायेन्वेवाकी मेन्द्विवहिक्षान्त्र विद्याप्तर विद्यापत्तर स्रेन्द्रीयद्द्यः" रिता क्रीका संकेद केंद्र पर्य

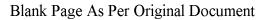
अध्यक्षेर्यक्ष्याचारवरीक्षेष्ठअहारु रिक्षान्यर्हे की चराहुत हुवा

(रहेग्राश्चर्वास्त्रीवामस्तिर्द्धिवास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रम्भावास्त्रम्भाक्षेत्रभाक्ष्यस्वस्वस्वत्वास्त्रस्य वयम

विक्राक्षित्व व द्रान्त्र व द्रान्त्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र अन्देश प्रशास्त्र रहे। बर्द्रवर्षायक्षेत्रकृष्टिक्षेत्रकृत्रायात्रवात्रवात्रवात्रवर्षाक्षेत्रवर्षात्र्याया 12014552412121 तरहेर्द्धाराहा पुरस्का सार्वा प्रमान प्रमान वर्ते र ह्वाया में श्राति है । **र्णणणणिदर्श**्च्यस्य द्वार विकासम्पर्येद्धर्यः स्ट र्गार्थ्यायप्राचर्गारयुर् ५५५७वयान्यान्यानुस्य वार्यार्थं वार्यार्थं प्रत्यार्थं प्रत्या हरन्द्र रायायाया अधितः नगैन्यक्वायस्य ५५४ वस्य स्य 1200 **मर्न्**यळेव्यादेश शुरुंच या कुँ यह **दर्गेय**वर्षिक्षुर्द्द्द्द्द् न्त्यं हेयरिकेश क्रिक्ष ब्रेलनतेवदेवसूर्वस्थितम्ब्रेलन्वहर् **द्रेषाद्र्यश्रह्र्या** वियद्क्रियायय गुर्वा स्वार्थ वान यात्र स्वान नित्र | श्रेषाराह्यक्षेत्र विद्वार के दि |र्वे विदेशके विदेशका विदेवर देश ब्रेटर बर्डिस में देश निस्ययपर्दित्द्व_वत्त्वव्तः उप र्गाट्यहर्याद्यस्ट्याच्यः ।

Best Possible Image

सुवा	१९४५ वित्रात्ते । १५११ । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० । १५१० ।	1 1	
क्षित स्वीर्वेत		68	



अक्षत्र मध्य के या च के अक्षत्र है। |बाद्रेस्बायरक्रेजशहंदर कटामियालपश्चर कार्ह्यवराश्चीव द्रतीस्व है स्वीतर हीत्। व्यक्षित्रयाम्यान्यद्वेषत्व क्रियश्र अश्र अ मारत के या वीत वार हो र है र ह शक्षरयोग्रयस्य मध्ययस्य शुन् **5**78 इस्वार्व्यत्त्राद्वाद्वर्थः पर्राम्य विक्रापरे के द सैर्यायापापापाय्यस्य গ্ৰেণ্ড 7. र्रेट्डे ख्यातर्ड वर्पयूयया वर्षात्र श्रीश्राद्द त्रार श्री वर्ष नीय<u>श्रीत्रेपच</u>ित्राची पार्टी द्वार है

वयायायाया रचले रचर्या सुर्वा

इत्रिव्हार्यात्रात्यात्रः

दह्रवयापावस्यव्हर्योगस्यहर्याः

69

इ६क्टूंचे देख

अदशकुषग्रात्कुः खेत्रायश्चन्वाह

שות הייביני

BYS

<u> শহর্মের্রুম্বরুর</u>

Please Visit TBRC.org to download the scan of the whole volume

Surrogate LC Cataloging Record

Rgya chen bka' mdzod: the expanded edition of the writings of 'jam mgon ...

LC Control Number: None

Type of Material: Book (Print, Microform, Electronic, etc.)
Personal Name: Kon-sprul Blo-gros-mtha'-yas, 1813-1899.

Main Title: Rgya chen bka' mdzod: the expanded edition of the writings of

'jam mgon kon sprul blo gros mtha' yas

Uniform Title: [Works]

Published/Created: New Delhi: Shechen, 2002.

Description: 13 v.

Notes: Text in Tibetan

Subjects: Buddhism--China--Tibet.

LC Classification: BQ7564 +

Dewey Class No.:

Geog. Area Code: a-cc-ti

CALL NUMBER: BQ7564+

TBRC Scanning Information

Scanned by M/s Satluj Siti Enterprises, 63-F Sujan Singh Park, New Delhi, India, for the Tibetan Buddhist Resource Center, 115 5th Ave. 7th Floor, New York, NY 10003 USA 2003

ORIGINALLY PRINTED BY SHECHEN MONASTERY WITH THE SUPPORT OF TSADRA FOUNDATION